https://archive.org/details/bk1076/page/n0/mode/1up

All Items on https://archive.org/details/realpatidar
tidar.com
Full Library on https://realpatidar.com/library

॥ सनातन सत्पंथ ॥

ॐ श्री निष्कलंकी नारायणाय नमः

सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज

रचित

मूलबंधग्रंथ के संक्षिप्त सार

सत्पंथ प्रेरणापीठ पीराणा, जि. अहमदाबाद.

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

No specific pages. See whole book.
References by: RealPatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n2/mode/1up

realpatidar.com

॥ सनातन सत्पंथ ॥

ॐ श्री निष्कलंकी नारायणाय नमः

सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराज

रचित

मूलबंधग्रंथ के संक्षिप्त सार

सत्पंथ प्रेरणापीठ पीराणा, जि. अहमदाबाद.

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n3/mode/1up

realpatidar.com

"मूलबंध ग्रंथ के संक्षिप्त सार"

चलो सत के पंथ पर...

-: प्रकाशक :-

सत्पंथ प्रकाशन समिति

प्रेरणापीठ, पीराणा जि. अहमदाबाद

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n4/mode/1up

realpatidar.com

सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराज का शुभ संदेश ही-मूलबंध है ।

प्रथम खंड से शुरु होता है ।

● **"प्रथम खंड" "दशह धंधुकार"**

(भाषा - संस्कृत मिश्र गुजराती)

इसमें सत्तरह स्तबक है । सात स्तबक में परब्रह्म परमात्मा का निर्गुण निराकार निरंजन स्वरुप का वर्णन है, स्वयं ज्योति स्वरुप मात्र से अनंतकाल में भिन्न भिन्न स्वरुप से अपनी प्रकृति के साथ अनंत लीला का वर्णन कीया है । गुजराती और संस्कृत मिश्र मधुर भाषा का ही ग्रंथ है । आठवा स्तबक से क्रमश प्रथम अनंत धंधुकार, दुसरा किल धंधुकार, तीसरा कलप धंधुकार, चौथा शेष धंधुकार, पांचवाँ महाधंधुकार, छठ्ठा शंख धंधुकार, सातवाँ द्विप धंधुकार, आठवाँ अरब धंधुकार, नववाँ नरब धंधुकार और दसवाँ तेज धंधुकार । ऐसे दस धंधुकारो में प्रकृति की उत्पत्ति अनुसार सृष्टि की रुपरेखा बनाई, इस सृष्टि में भिन्न भिन्न स्वरुपो से चैतन्य प्रकाशीत हो रहा है ।

● **"द्वितीय खंड" "देवी और नारायण का संवाद" है ।**

श्री शक्ति देवी और नारायण का संवाद रूप से पुरुष, प्रकृति, मह तत्त्व, और अहंकार तत्त्वों से पिंड की निर्मिती को ये ब्रह्मांड में मानव, दानव, दैव्यकुल, नागकुल, वनस्पति आदि चैतन्य सृष्टि निर्मित हुई, इसमें मानव और प्राणी मात्र का आहार विहार और व्यवहार का वर्णन किया है, ये सृष्टि की कालगणना, चार कल्पो

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n5/mode/1up

realpatidar.com

की रचना चार युगो की, चार वाणी, चार खाणी और वर्णाश्रम की रचना, सत्धर्म के जिवात्माओ के मुक्ति मार्ग की रचना, धर्मग्रंथो की रचना, दशावतारों का वर्णन और चतुर मूर्त स्वरुप की लीला, सृष्टि उत्पत्ति, स्वर्ग, नर्क और मोक्ष मार्ग का वर्णन किया है ।

- **"तृतीय खंड" "श्री देवी नारायण संवाद" 'गर्भगोल'**

ये खंड में पिंड की निर्मिती का वर्णन है, प्रथम शब्द ॐकार से सब निर्माण किया है, जीव पिंड के साथ प्रकृति और ब्रह्मांड तत्त्व की रचना, चौद भुवन, सात समुद्र, नदीओं, पर्वतो, वन, उपवन, वेद, विद्या, शास्त्रो सर्व रचना जैसे ब्रह्मांड में सर्जन की है, वैसे ही रचना पिंड में की है, इस लिये सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराज ने ईश्वर दर्शन के लिए जीवात्मा को अपने आप के पिंड में ही खोज करने का मार्ग बताया है, जैसे ब्रह्म, माया, जीव, पंचकोश, कर्म, भक्ति, ज्ञान, विवेक, दम, शम, मुमुक्षत्त्व को, मुक्ति के लिये अष्टांग योग का मार्ग बताया है। जब जीवात्मा पिंड छोडकर जाता है फिर क्या होता है वो सब विस्तृत रुप से, गर्भगोल याने श्रीदेवी नारायण संवाद में पुरा वर्णन किया है ।

- **"चतुर्थ खंड" (४) "निष्कलंक गीता" "देही शोधन" चित्त विचार**

गुरु शिष्य संवाद के रूप से ये ग्रंथ में चर्तुशून्य निरुपण, चतुर्देह निरुपण, पंचमहाभूतो का पंचीकरण, षडचक्र दर्शन, भेदन और ब्रह्मचक्र दर्शन, चतुर्मुद्रा, चतुर्मुक्ति, आत्मतत्त्व निरुपण, हठयोग, साधन, दिव्यमार्ग कथन, नवधा भक्ति, अष्ट सिद्धि, नवनिध्धी,

realpatidar.com

realpatidar.com

लिंग देह की छतीस कलाओं का वर्णन, गायत्री मंत्र निरुपण जैसे सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान का भंडार ये चौवीस प्रकरण में विवरण किया है ।

● **"पाँचवा खंड" (५) "शिष्य पुराण"**

गुरु शिष्य संवाद रूप से ये खंड में जीव, ब्रह्म, माया, गुणतत्त्व, जीवन मुक्ति का लक्षण, विदेह मुक्ति का लक्षण और ये जगत के पाखंडीओंका व्यवहार, धूर्त व्यवहार करनेवाले लोगों चमत्कार करके कहीं लोगो को भाँती में डालने वाले व्यक्तियों से संभलनेका तरीका बताया है । अज्ञानी और अबुज लोगों को सावध रहेने का मार्ग बताया है ।

● **"छठ्ठा खंड"(६) "विराट स्वरुप"**

ये खंड में ब्रह्मांड की उत्पत्ति, सप्तपाताल, स्वर्गलोक, मृत्युलोक और भूलोक का वर्णन है, सप्तद्वीप, नवखंड पृथ्वी और एकवीस स्वर्ग, जैसे की-भूर्वलोक, पितृलोक, इन्द्रभुवन, अमरावतीपुरी, संयमिनीपुरी, यमपुरी, रुद्रपुरी, ब्रह्मपुरी, विष्णुपुरी, क्षीरसागर, शिवपुरी, सूर्यमंडल, चंद्रमंडल, ताराभुवन, नक्षत्रमंडल, ग्रहमंडल, ज्योतिमंडल, शिशुमारचक्र, ध्रुवमंडल, कैलासपुरी, पुण्यस्वर्ग, वसंतपुरी, गणस्वर्ग, कृष्णपुरी, गंधर्वस्वर्ग, सुभहागपुरी, मालतंत स्वर्ग, उंचस्वर्ग, रेवतस्वर्ग, नीलस्वर्ग, रुद्र मंडल, महर्लोक, अमरापुरी मंडल, जनलोक, तपोमंडल, तपोलोक, तेजोमंडल, सत्यलोक और "निजधाम" (निरंजनपद-मोक्षपद). इस प्रकार से सर्व विवरण किया है और वायु की सात शाखाओं का विस्तृत रूप से विवरण किया है ।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n7/mode/1up

realpatidar.com

- **सातवाँ खंड" (७) "युग सृष्टि का निर्माण"**

ये खंड में विश्व की रचना करने के लिये कितना समय काल की अवधि का विवरण अठ्ठावीश प्रकरण में किया है । श्री आधनारायण प्रथम पुरुष के स्वरूप से प्रगट हुए और विश्व की, ब्रह्मांड की, प्रकृति की रचना करने में तहत्तर युग (७३) की समय काल अवधि का विवरण ये खंड में बताया है ।

- **"आठवाँ खंड" (८) "जडबंध"**

ये खंड में पृथ्वी की जड याने मूल की रचना का विवरण है, स्थूल रूप से पंचमहाभूतो की रचना कैसे हुई, त्रिगुणात्मक देवताओ का गुणधर्म-सत्व, रजस, तमसा त्रिगुणी माया से सृष्टी की उत्पत्ति और लय की बात बताई है, प्रथम शब्द ॐकार, और चार वेदो का प्रकाश हुआ और चार खाणी के जीवात्मा की उत्पत्ति, जीवात्माओं को सत्कर्म करने के लिए, सत्पंथ धर्म की रचना की । प्रथम तीन (३) कल्पो की रचना जैसे, दशरायण, देवगुण, लीलवगुण और उसके समय अवधी काल छत्तीसयुग तक सृष्टि चक्र याने जीवात्मा का जन्म मरण चक्र चलता रहा था और उसके बाद चौथा श्वेतवेरा कल्प की रचना हुई । ये कल्प में चार युग और विष्णु परमात्मा का दशावतार का निर्माण किया, (१) कर्तायुग (सतयुग) (२) त्रेतायुग (३) द्वापरयुग (४) कलियुग । कर्तायुग में ऋग्वेद की गायत्री मंत्र का प्रभाव था । त्रेतायुगमें यजुर्वेदकी गायत्रीका प्रभाव भा । द्वापरयुग में सामवेद की गायत्री मंत्र का प्रभाव था और आज वर्तमान कलियुग में अथर्ववेद की गायत्री मंत्र का प्रभाव रहा है । इस लिये सद्गुरु श्री इमामशाह महाराजने

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n8/mode/1up

realpatidar.com

अथर्ववेदका ही मार्ग बताया है । आज सत्पंथ धर्म में अथर्ववेद के आधारीत कर्मकांड का मार्ग बताया है, इस लिये सत्पंथ को आर्यवैदिक सत्पंथ सनातन धर्म कहेते है ।

सत्पंथ धर्म में श्री विष्णु परमात्मा के दशावतार का वर्णन किया है । इस लिये सत्पंथ धर्म वैष्णव धर्म कहा जाता है । दशावतार का विवरण इस प्रकार से किया है । (१) श्री मत्स्य (२) श्री कूर्म (३) श्री वराह (४) श्री नृसिंह (५) श्री वामन (६) श्री परसुराम (७) श्री राम (८) श्री कृष्ण (९) श्री बुद्ध और (१०) श्री निष्कलंकी याने कलियुग के स्वामी है इस लिये श्रीकल्कि कहा जाता है । आज वर्तमान कलियुग में सत्पंथीओका प्राधान्य देव श्री निष्कलंकी माना जाता है ।

सद्गुरु श्रीने, ये मूलबंध ग्रंथ में और भी ज्ञान साहित्य का वर्णन किया है, जैसे की (१) मुनिवर चेतावनी (२) ऋषिवर चेतावनी (३) मनहरज्ञान (४) संतवाणी (५) योगवाणी (६) गुरुवाणी (७) शिक्षापत्री और आगमवाणी । ऐसे आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान और ब्रह्मज्ञान से सभर ये मूलबंध ग्रंथ में विवरण किया है । ये सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज का हस्तलिखित ग्रंथ सर्व जीवात्माओं का कल्याणकारी मार्ग है ।

सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज जब भारत की पावन धरती पर इ.सन् चौदवीं सदी में जन्म धारण करके अपने कदमों को रखे और उन्होंने भारतीय स्वांग में मूल श्रूत भगवान वेद का दर्शन किया । वेद प्रतिपादीत वैदिक प्रणाली जो धर्म था उस धर्म का उन्होंने प्रचार कीया । ऐसा नहीं है की सद्गुरु श्री इमामशाह

realpatidar.com

realpatidar.com

महाराजने किसे नये धर्म का निर्माण किया है, की धर्म की प्रतिष्ठा की हो, ऐसा नहीं है बल्के जो अनादि काल से आ रहा वैदिक धर्म को श्री इमामशाह महाराजने स्वीकार किया। ऐसे इमामशाह महाराजने जब देखा की भारतकी पावन धरती पर रहने वाले करोडो हिन्दुओं अपने अनादि कालीन वैदिक धर्म को भूल रहे हैं और अनादिकालीन वैदिक धर्म को भूलने के कारण दुःख और विपत्ति के शिकार हो रहे हैं, तो बडी ही ईमानदारी से इस करोडो आर्यवर्त में रहनेवाले हिन्दुओं को वैदिक धर्म का संदेश देने का उत्तरदायीत्व श्री इमामशाह महाराजने स्वीकार किया, और ऐसे वैदिक धर्म का संदेश देने के कारण, करोडों करोडों आर्य हिन्दुओने श्री इमामशाह महाराज को अपना प्रणेता और अपना पूज्य माना। इस लिये माना की इनके संदेश से हम सबका कल्याण हुआ।

भारत देश धर्म परायण देश है। यहाँ हिन्दु धर्म के सनातन मार्ग पर चलनेवाले अनेक संप्रदाय हैं। ऐसे संप्रदायो में एक है सत्पंथ धर्म।

यह सत्पंथ महापंथ धर्म है। जिसके मूल तत्त्व का आधार और आरंभ सनातन मार्ग से हुआ है। इस लिये हिन्दु संस्कृति की सात्त्विक विचार धारा से संलग्न, तत्त्वज्ञान का भरपूर खजाना इस धर्म में है। इस लिये सत्पंथ धर्म के सिद्धांत और आदर्श का प्रतिपालन ही मोक्ष मार्ग का उत्तम साधन माना गया है।

यह पवित्र सत्पंथ धर्म के श्री इमामशाह महाराज एक संत धर्मात्मा थे। वह शुद्ध ब्रह्मतत्त्व और आदि सनातन हिन्दु धर्म के प्रखर अभ्यासी और हिमायती थे। उन्होंने जीवन पर्यंत वैदिक हिन्दु धर्म का शुद्धाचरण प्रेरित सत्पंथ का मार्गदर्शन किया है।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n10/mode/1up

realpatidar.com

वो हर समय कहते थे कि,

'सनातन सत्पंथ धर्म युग धर्म है और इस धर्म का आचरण करनेवाला सच्चा सत्पंथी है ।'

सत्पंथ ऐसा मार्ग है जो आर्य वैदिक सनातन मार्ग से मिलता आता है। श्री इमामशाह महाराज इसके प्रवर्तक है। चौदवी सदी में वो पीराणा स्थानमें आये थे । और उन्होंने अपने सनातन मार्ग का अनुसरण करते सत्पंथ के बारे में तत्त्वोपदेश दिया है । ईश्वर का स्वरूप निर्गुण निराकार सत्चित् आनंद स्वरूप है, इसके ध्यान के लिए सत्चित् आनंद का ध्यान ज्योति स्वरूप से होता है। क्यों कि सभी प्राणी मात्र के हृदय के अन्दर वह परमात्मा सत्चित् स्वरूप से बैठा हुआ है । उसीका ध्यान करने का स्वरूप याने ज्योति स्वरुप ध्यान है । उसीकी कोई मूर्ति नहीं है । उसीका कोई हाथ पैर वगेरे नहीं है। वो निराकार स्वरुप है। ज्योति स्वरूप है । इसी लिए उसका ध्यान करना एक तत्त्व है । दूसरा तत्त्व है सनातन का "ॐ का स्मरण, ॐ प्रणव ब्रह्म" । इस जगत में सभी से श्रेष्ठ एसा महा मंत्र है । जीतने भी महा मंत्र है, बीज मंत्र मूल मंत्र है उसमें एक श्रेष्ठ मंत्र है 'ॐ' । जीसके स्मरण से जीव प्राणी मात्र का अविद्या रूप अंधकार नष्ट होकर सब ध्यान प्राप्त हो जाता है । मृत्यु का भय दूर होता है । इस लिए श्री इमामशाह महाराजने अपनी पूजा विधि में जीतने भी मंत्र बतायें हुए है । उसे ॐ का उच्चार करने का आदेश दीया है । तिसरी बात आती है घटपाट की पूजा । यह पूजा कर्मकांड की है । हरेक संप्रदाय में कर्मकांड का आयोजन किया जाता है । क्यों की मनुष्य शुद्धि के लिए

realpatidar.com

realpatidar.com

कर्मकांड की बहुत आवश्यकता है । कर्मकांड करते करते जीवात्मा सकर्म मार्ग से निष्काम तक पहुँच जाता है । इस लिए पहली भक्ति है कर्मकांड की । इस लिए यहां सनातन सत्पंथ मार्ग में कलश पूजा बतलाई गई है । जिसके द्वारा इस विश्व में व्यापक अन्योन्य देवी देवताओं की उपासना भक्त कर सकता है । सूर्य, चंद्र, इन्द्र, वायु, वरुण, अग्नि, सोम, विश्वकर्मा, विराता आदि अनेकानेक देवताओं जीन पर मनुष्य जीवन उपलंबित रहेता है । जीसकी उपासना करने से मनुष्य मुक्ति तक पहुँच जाता है । इस लीये सत्पंथ को महापंथ कहा जाता है । यह पूजा अथर्ववेद के आधार पर श्री इमामशाह महाराजने बताई है ।

और चौथी बात आती है अवतार वाद याने कि अवतार की उपासना । युग धर्म के अनुसार इस कलियुग में जो होनेवाला अवतार है श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की उपासना करने से, उसका नाम स्मरण और गायत्री मंत्र से ध्यान चिंतन करने से श्री निष्कलंकी नारायण भगवान अपने हृदय में प्रगट होते हैं । श्री निष्कलंकी नारायण भगवान अब प्रगट नहीं है । फिर भी उसका ध्यान स्मरण करने से व अपने हृदय में स्थित होते है । ये ध्येय और उद्देश श्री इमामशाह महाराजजीने बताया है ।

इस ज्ञानी और योगी धर्मात्मा ने मानव कल्याण का मुख्य साधन शुद्धाचरण और सात्त्विकता है, ऐसा द्रढतापूर्वक कहकर प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या में विधिवत् पालन करने का आदेश दिया है ।

विशेषतः सर्व धर्म सम भाव और सहिष्णुता युक्त आदरभाव

realpatidar.com

realpatidar.com

का पालन करने का उपदेश देकर जगत के सभी संत, महंत, साधु, ऋषिमुनियों को बडा आदर दिया है । उनकी द्रष्टि से सभी धर्म और संप्रदाय मानव मात्र को सत्य के मार्ग पर ले जाने वाले हैं । ऐसे सभी सामान्य मनुष्य, धर्म की सच्ची भावना, भजन, पूजा, जप-तप सेवाभाव, संत समागम और व्रत द्वारा प्राप्त कर सके, यह उद्देश्य से श्री इमामशाह माहाराजने घटपाट पूजन का आदेश देकर सरल साधन प्रदान किया है ।

दान धर्म का महत्त्व और महिमा प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा है, कि मानव मात्र का अपनी निजी कमाई का दसवाँ या बीसवाँ हिस्सा देव मंदिर या सुपात्र स्थान में दान के रूप में अर्पण करना चाहिये ।

शुद्धाचरण का पवित्र मार्ग दिखाते हुए सत्पंथ के श्री इमामशाह महाराजने उत्तम और उच्च कोटि के तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानपद साहित्य का निर्माण कीया है, यह सभी ग्रंथ का मूलाधार अथर्ववेद है ।

जीसके फल स्वरूप उन्होंने मूलबंध जैसे अद्वितीय हस्तलिखित महाग्रंथ की रचना की है ।

मूलबंध ग्रंथ में मानव के जीवन-मृत्यु की उद्धारक संस्कार विधि प्रस्तुत की है । पींडदान द्वारा मृतात्मा को शांति और मोक्ष देनेवाली उटासण की सात्त्विक क्रिया का निर्देश किया है । इसके अतिरिक्त जन्म-मरण की शास्त्रोक्त क्रियाओं का सूतक-प्रायश्चित और देह-मन शुद्धियों की आंतरबाह्य प्रक्रिया प्रदर्शित करनेवाली मंत्र विधि भी दिखाई है । और सारा ब्रह्मांड सर्जनहार निर्जन

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n13/mode/1up

realpatidar.com

निराकार आद्य नारायण से देव और "ॐ" प्रणव मंत्र का अध्ययन और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और शक्ति माता की ज्योति पूजन करना, यह सत्पंथ की महत्त्वपूर्ण प्रणालिका है ।

वेद-उपनिषद और पुराण धर्मग्रंथो का अध्ययन द्वारा इन युग पुरुष ने भगवत्गीता, भागवत, रामायण और महाभारत जैसे धर्मग्रंथो को पवित्र माने है और दशावतार का वास्तविक महत्त्व दिखाकर, ईश्वर प्रेरित युग धर्म के अवतार कार्य की अर्थ पूर्ण समीक्षा करके, दशवाँ अवतार श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की पूजा-उपासना करने की प्रेरणा दी है । इसके फलस्वरुप सत्पंथ धर्म में श्री निष्कलंकी नारायण भगवान को आराध्य देव मानकर स्थापित करने का आदेश दिया है ।

व्रत-त्यौहार एवं तिथि-त्यौहारों को उत्सव के रूप में मनाने के लिये गुरुवार, चंद्रदर्शन, गुडी पडवो, गुरुपूर्णिमा, राम नवमी, जन्माष्टमी, दशहरा, दिपावली को अग्रस्थान दिया है ।

इससे अतिरिक्त आत्मशुद्धि का आधार शरीर शुद्धि है, ऐसी हेतुलक्षी बात समझाते हुए श्री इमामशाह महाराजने मादक पदार्थ का सेवन विष समान है एसा कहकर निषेध बताया है। और अहिंसा, प्रेम, दया, सद्भाव, सेवा एवं विनय-विवेक जैसे सद्गुणो का प्रतिक्षण पालन करने का परम कर्तव्य माना है ।

ऐसे अनादि काल से प्रचलित पवित्र सत्पंथ धर्म की वर्तमान परिस्थिति की वास्तविक समीक्षा करते हुए प्रवर्तक तत्त्वचिंतको और धर्माचार्यों के मतानुसार सत्पंथ धर्म, हिंदु सनातन धर्म प्रेरित पंथ है । यह पवित्र धर्म मार्ग को मानने वाले अनुयायीओं में हिन्दु

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n14/mode/1up

realpatidar.com

जाति के कुणबी, राजपूत, लेउवा-कडवा पाटीदार, मराठे, गुर्जर, भावसार, साली, माली, कोली, सुतार, भोइ, मछियारे, राणा, गौचरी, पंसारी, आदिवासी, ठाकुर, बारेया और यादव जैसे अनेक जाति-उपजाति के लोगों का समाविष्ट होता है। जो गुजरात, कच्छ, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और अन्य प्रदेशो के निवासी है ।

विद्यमान परिस्थिति में यह धर्म के ६०० से भी अधिक मंदिर एवं पूजास्थान है। जहाँ नियमित रूप से पूजा-अर्चना, आरती, भजन, सत्संग प्रतिदिन प्रातः संध्या होते रहते हैं ।

आज यह प्रेरणापीठ पवित्र धाम का बहुलक्षी विकास हो रहा है। वर्ष के प्रत्येक दिन यहाँ अनुयायी और भाविक दर्शनार्थी बडी भारी संख्या में आते रहते है ।

सत्पंथीओं के लिए यहाँ निःशुल्क भोजन की व्यवस्था सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के समय से है। यहाँ एक गौशाला है। जिसमें गौ पालन होता है। विशेषतः इस पवित्र स्थान की व्यवस्था ट्रस्ट कमिटि द्वारा चलाई जाती है। ट्रस्ट के अध्यक्ष महोदय ही धर्म के आचार्य एवं पिठाधिकारी रहते हैं, वो इस संस्था की संपूर्ण व्यवस्था और धार्मिक गति-विधियों प्रति कार्यभार संभालते हैं ।

इस संस्था का वर्तमान पिठाधिकारी सत्पंथाचार्य जगद्गुरु श्री नानकदासजी महाराज है। पिठाधीकारी का, सभी अनुयायी और भाविक भक्तजनो, पूजनीय भाव से सम्मान करते हैं ।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n15/mode/1up

realpatidar.com

सत्पंथ धर्मग्रंथ मूलबंध

सत्पंथ धर्मग्रंथ मूलबंध के हस्त लेखीत ग्रंथ की प्रथम प्रत का निर्माण हुआ । संवत १५४६ मृगशीर्ष मास शुक्ल द्वीज शुक्रवार ।

सद्गुरुश्री इमामशाहजी महाराज की वाणी संस्था के प्रथम आचार्य श्री शाणाजी महाराज के हस्त लेखित प्रथम प्रत है ।

दूसरी प्रत का निर्माण

संवत १६३० अश्विन मास कृष्ण पक्ष के त्रितेयीय १३ धनतेरस संस्था के आचार्य श्री श्यामजीदासजी महाराजने किया है ।

तीसरी प्रत का निर्माण

संवत १७६४ चैत्री मास शुक्ल पक्ष पूनम १५ बुधवार, संस्था के मुखी महाराज श्री प्रेमजीभाई देवश्रीभाई प्रेरणापीठ पीराणा ने कीया है ।

चौथी प्रत का निर्माण

संवत १८८६ वैशाख शुकल पक्ष द्विज रविवार, मुखी महाराज श्री धनजीभाई इसरामभाई ने कीया है ।

फैजपुर - पूर्व महाराष्ट्र

पाँचवी प्रत का निर्माण

संवत १९२४ आषाढ मास शुक्ल पक्ष पूनम. के मुखी महाराज श्री जयरामबारी शिक्षक ने किया है । गाँव - उटखेड़ा के निवासी स्थान सत्पंथी धर्मशाला फैजपुर - पूर्व महाराष्ट्र

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n16/mode/1up

realpatidar.com

छठ्ठी प्रत का निर्माण

संवत २०३० मृगशिर्ष मास शुक्ल पक्ष १५ पूनम शनिवार से शुरुआत की और कार्य समाप्ति संवत २०३२ अश्विनमास कृष्णपक्ष - ३० अमावास्या दिपावली ता. २३ अक्टुंबर १९७६ ।

आचार्य श्री जगन्नाथजी महाराजने कीया है ।

सत्पंथ मंदिर - फैजपुर - पूर्व महाराष्ट्र

उपरोक्त सभी हस्त लेखित ग्रंथ की सत्य प्रत है ।

वेद धर्मका मूल सत्य है

सभी धार्मिक संप्रदाय और मतोका मूल वेद धर्म है। उसमें दो मत नहीं है । इसे दो मत नहीं हो शकता है । वैदिक धर्मकी मानव जीवनमें आवश्यक्ता क्यों है! इस विषय पर हमारे महापुरुषोने प्रकाश डाला है। धर्मका सीधा सा अर्थ है - धारण करना, स्वीकार करना । किसीको धारण करना, किसीको स्वीकार करना ।

जो वेद भगवानका सत्य है, शास्त्र वाणीका सत्य है, संत वाणीका सत्य है, गुरु वाणीका सत्य है, मानव जीवनका सत्य है। उस सत्यको धारण करना। सत्यसे ओर महान दूसरा कोई धर्म नहीं है। गोस्वामी संत तुलसीदासजीने स्पष्ट शब्दोमें कहा है की; ''धर्म दूसर न सत्य समाना, आगम-निगम पुराण बसाना'' । वेदोमें, पुराणोमें, शास्त्रोमें जगह जगह पर यह बात आई है की सत्यसे बडा दूसरा धर्म कोई नहीं है । इस प्रकारके सत्यको धारण करनेका संदेश वेद भगवान देते है।

सद्गुरु श्री इमामशाह महाराजने जब भारतकी पावन धरती पर अपने कदम रखें, और उन्होने भारतीय स्वांगमें मूल भगवान वेदका दर्शन किया, वेदका अध्ययन किया । तो वेद प्रतिपादित, वेद प्रतिप्रणालित जो धर्म था,

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n17/mode/1up

realpatidar.com

उस धर्मको उन्होने स्वीकार किया। ऐसा नहि है की सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने कीसी नया धर्मका निर्माण कीया हो। नये धर्मकी प्रतिष्ठा की हो। ऐसा नहीं है, बल्के अनादिकालसे वैदिक धर्म चला आ रहा था, उस अनादिकाल से चले आ रहे वैदिक धर्मको सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने स्वीकार किया। श्री इमामशाह महाराजने जब देखाकी भारतकी पावन धरती पर रहनेवालें करोडो करोडो हिन्दु अपने अपने अनादिकालिन वैदिकधर्मको भूल रहे है और अनादिकालिन वैदिकधर्मको भूलनेके कारण वह दुःख और बडी विपत्तिके शिकार हो रहे है। तो वही इमानदारीसे इस करोडो करोडो आर्यवर्तमें रहनेवाले आर्य हिन्दुओकों वैदिकधर्मका संदेश देनेका उत्तरदायित्व सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने कीया और वैदिक धर्मका संदेश देनेके कारण करोडो करोडो आर्य हिन्दुओने सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजको अपना पूज्य माना, अपना प्रणेता माना। अपने प्रणेता इस लिये माना की, उसके उपदेशसे, उनके संदेशसे हम सबका कल्याण हुआ।

हम जो आर्यवर्तके रहनेवाले आर्य हिन्दु है। हमने वैदिक सद्‌विचारोकी पूजा की है, सत्यकी पूजा की है, वैदिक सत्योकी पूजा की है। ऐसे सद्‌विचार एवं वैदिक सत्योंको जिसने स्वीकार किया है उसकी हमने पूजा की है। हम कहते है किए कीसीभी महान व्यक्तित्वमेंसे सद्‌विचार, सदाचार और सत्यको निकाल दिया जाय तो महानताके नाम पर वहां कुछ भी शेष नहीं रह जाता। महानके नाम पर भी कुछ बच नहीं जाता। अतः हम सदाचारके, सद्‌विचारके और सत्यके पूजारी रहे है। हमारी जो वैदिक प्रणाली रही है, वैदिक धर्म रहा है, वैदिक धर्मके प्रकाशमें सद्‌विचार और सत्यको मूल दिया गया है और ऐसे सत्योको जिसने स्वीकार किया, उसको हमने महान कहा, उसको हमने सन्मानित किया। इसी शृंखलामें सद्‌गुरु श्री इमामशाह महाराजने जब यही वैदिक सदाचार प्रणालीको, वैदिक सद्‌विचारकी प्रणालीको और वेद भगवान प्रतिपादित सत्यको स्वीकार किया, तो हमने भी उनको महान कहा।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n18/mode/1up

realpatidar.com

गत समयकालिन सत्पंथ प्रेरणापीठ द्वारा आयोजित वैदिक भारतीय धर्म संमेलनका आयोजन कीया था। यदी उसको उन्मुख दृष्टिसे देखु तो मैं कह शकता हुं की यह भारतीय वैदिकधर्म संमेलन सागरकी भूमिका, समुद्रकी भूमिका निर्वाह कर रहा था। यह बात अतिशयोक्तिसे रूपमें नहीं है, क्योंकि समुद्र ही सभी नदीयोंकी गति है। इसी प्रकार सभी संप्रदायकी गति है एक मात्र वेद। और उस वेद प्रतिपादित यह जो धर्म है वैदिकधर्म – सनातन सत्पंथ।

वैदिक सनातन सत्पंथका जो सत्य कहला संदेश है की अपने जीवनमें उदारताको प्रतिष्ठित करें। उदारताको प्रतिष्ठित करनेकी भूमिका है आत्मीयता अर्थात् अपनापन। यदी अपनापन नहीं होगा तो उदारताकी प्रतिष्ठा नहीं हो शकती है। उदारताकी अभिव्यक्ति नहीं हो शकती है। अत: कीसी न कीसी नाते सब एक है। इसी सत्यको हमे पहले स्वीकार करना होगा। जब करोडो करोडो आर्य हिन्दुओंका वेद भगवान एक है। तो वेद भगवानकेनाते, हम सब एक है। इस सत्यको स्वीकार करना होगा। इसमें कोई गैर नहीं है, कोई और नहीं है, कोई पराया नहीं है, कोई दूसरा नहीं है, कोई तीसरा नहीं है। सभी हमारे है, सभी अपने है, सभी हमारे अपने इस लीये है की अपना आराध्य–साध्य वेद भगवान है। जब हम इस एकताको स्वीकार करतें है तो आत्मियताका विकास होता है। सब हमारे अपने लगते है। यह सिध्धांत है। जो हमे अपना लगता है, उसका सुख हमारा सुख है। उसका दु:ख हमारा दु:ख होता है।

वर्तमान परिक्षेप्तमें जो सबसे बडी समस्या दीखाई दे रही है, वह समाजमे वर्गीकरणका है, समाजमें विखरावका है, समाजमें टुटावका है और यह टुटाव जब आता है तब व्यक्ति स्वयं भीतरसे टुटना शुरु होता है। उसके हृदयका विकास नहीं हो रहा है। आज व्यक्ति उदारतासे दूर हो गया है, उदारताको दो शब्दोमें परिभाषित करें तो उदारताका सीधा अर्थ हमारी समजमे यह आता है की कीसी सुखी प्राणीको देखो या किसी सुखीयाको देखो तो उस सुखी प्राणीको देखकर इर्षा मत करो, बल्केप्रसंन्नता व्यक्त करों। कीसी दु:खी

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n19/mode/1up

realpatidar.com

प्राणीको देखो तो उस दु:खी प्राणीको देखकर धृणा मत करो। उसकी दुर्दशाको देखकर उस पर करूणा करो। दु:खी प्राणी करूणाका पात्र है। सुखी प्राणी प्रसंन्नता पात्र है। आज समाजमें जो अपनेको सुखी और श्रीमान मानकरके चल रहा है, वो दु:खीको और गरीबोको धृणा करता है। जो अपने को दु:खी और गरीब मानकरके चल रहा है, वह सुखीके सुखकी इर्षा करता है, धृणा करता है। इस लीये समाजमें आया व्यक्तिमें उसका हृदय परिप्रेरित नहीं हुआ है। और वह उदारतासे परिप्रेरित नहीं है। उसका हृदय परिप्रेरित इस लीये नहीं है की उसके जीवनमें आत्मियताकी प्रतिष्ठा नहीं हुई है। वह कई इकाईओमें विभाषित होकर समाजसे दूर करके जी रहा है। लोगोंको अपना शेषको पराया मान रहा है। उसकी यह जो वर्गी कृत मान्यता है, अपने और परायाकी, वह उसके जीवनको अखंड नहीं बनने दे रही है।

अत: इस वैदिक धर्मके नाते हम सभीका आराध्य भगवान वेद एक है। वेद भगवानके नाते हम सब एक है। अत: आजसे गेरीयत मान्यता, परायापन मान्यता अपने जीवन से निकाल दी जाय।

जब वेद भगवानने हमे ब्रह्म ज्योति और प्रणव जो ब्रह्मका ही साक्षात् स्वरूप है, प्रणव ॐ की उपासनाकी बात कही तो ॐ भी हमारा एक है। तो उपास्यके नाते हम सब एक है। उपास्यके नाते इस एकताको स्वीकार करो तो जीवनमें आत्मियताका विकास होगा। सभी अपने लगेगे। कोई पराया नहीं लगेगा। और जब कोई पराया नहीं लगेगा तब इर्षाका कई स्थान नहीं रहेगा। धृणाका कोई स्थान जीवनमें नहीं रहेगा और धृणाके स्थान पर करूणा और इर्षाके स्थान पर प्रसंन्नता आकरके बिराजमान होगी। जो जीवनमें करूणा और प्रसंन्नता भरेगा वह सच्चा वेद भगवानका उपासक होगा। वह सच्चा वेद भगवानकी भक्ति करनेवाला होगा।

यह संदेश जीस परंपरासे मील रहा है, वह परंपरा है सत्पंथ। सत्पंथ प्रेरणापीठकी परंपरा। हम सब कहते है की हमारे ब्रह्मलीन प.पू.

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n20/mode/1up

realpatidar.com

जगत्गुरु श्री करसनदासजी महाराज इस परंपरामें अर्थात् सत्पंथ प्रेरणापीठकी परंपरामें एक क्रांतिकारी संत हुए है। और यह क्रातिकारी शब्दका प्रयोग हम इस लीये करते है की कीसी व्यवस्थाको परिवर्तन करनेका नाम ही क्रांतिकारी है और यह क्रांतिकारी कदम उठानेकेलीये कीतना बडा साहस कीया होगा। यह साहस सत्यको स्वीकार करनेकी दिशामें था। वह सत्यको स्वीकार करनेकी जो दिशा है, वह क्रांतिकारी पथ है, वह क्रांतिकारी दिशा है। क्रांतिकारीओंके पथ पर हमारे ब्रह्मलीन प.पू. जगत्गुरु श्री करसनदासजी महाराज चल पडे थे और इनके इस सत्य निष्ठाको, इस वेद निष्ठाको, इस धर्म निष्ठाको देखकर पूरे भारतके संत आज सत्पंथ प्रेरणापीठ के साथ है, और प्रेरणापीठ अपनी गौरव अनुभव कर रहे है।

कर्मयोगी संत

ब्रह्मलीन प. पू. विरवर, देवर्षि, राष्ट्रीयसंत, युगपुरुष, सत्पंथाचार्य आध जगद्गुरुश्री करशनदासजी महाराज प्रेरणापीठ पीठाधिश्वर, पीराणा

५८० साल से चली आयी इस प्रेरणापीठ गादी पर सत्पंथ धर्म के प.पू. सत्पंथाचार्य जगद्गुरुश्री करशनदासजी महाराज २२वे गादीपति थे। उन्होंने अपने सुखमय सांसारिक जीवन को त्याग कर साधुमय जीवन अपनाया और उनके जीवन आदर्शोंको सिद्ध करने के लिए आजसे पचीस साल पहले ५८० साल की परंपरा अनुसार चली आ रही प्रथमानुसार २२वे गादीपतिके रूपमें बिराजमान हुए।

realpatidar.com

realpatidar.com

सद्गत दिव्य संत महात्माने अनेक सत्कर्म किये । समाज उध्धार, धर्म उध्धार, गरीबो की सेवा, व्यसन मुक्ति, छोटे-छोटे बाल-बालीकाओं को संस्कार सिंचन, सामाजिक ऐकता, निष्काम भावना प्राधान्य, वसुदैव कुटुंब की भावना, निजानंद प्रभुमय स्वरूप जीवन जैसे कर्म ही उनका जीवन मंत्र था । बहुत कम समय में समाज एवं धर्म की जो मांग थी उसे जरुरी क्रांतिकारी परिवर्तन करके समाज, धर्म, देश को नया मार्ग दिखाया । ऐसे विरल दिव्य संत को जगद्गुरु शंकराचार्यो, जगद्गुरुश्रीओं, महामंडलेश्वरो, महंतो, संतो, बुद्धिजीवीओंने "शुभकामना" पारितोषिक, "परिवर्तन युगपुरुष" पारितोषिक, "राष्ट्रीय युग पुरुष" पारितोषिक, "राष्ट्रीय संत" पारितोषिक, "देवर्षि" पारितोषिक जैसे महान पारितोषिको से सन्मानित किये थे । ब्रह्मलीन क्रांतिकारी संत महात्माने गीता, वेद, उपनिषद, रामायण, श्रीमद् भगवत दशावतार ग्रंथ जैसे महान ग्रंथो और अवतारी दिव्य आत्माओं का आधार लेकर क्रांतिकारी "जगद्गुरु" के रूप में बिरुद पाया था ।

उनकी दिव्य आत्मा हम सबके बीचमें से अलग होने से धर्म, समाज, देश एवम् साधु संतो में उनकी कमी महसुस हो रही है ।

दिवंगत् आत्माने सत्पंथ धर्म का सुवर्णकाल का प्रारंभ कीया । आज समय पर नजर का प्रारंभ कीया । आज समय पर नजर डालते है तो सत्पंथ धर्मने उन्होंने अभूतपूर्व मान-सन्मान और गौरव प्रदान किया है, जो प्रेरणापीठ के ५८० साल के इतिहासमें अजोड और अनमोल है ।

realpatidar.com

realpatidar.com

सत्पंथ सनातन वैदिक धर्मका पावन संदेश भारतभरमें फैलाकर धर्म की भावना, धर्म जागृति के लिए संस्कार, संस्कृति और व्यसन मुक्ति, एवम् बाल-बालिका संस्कार शिक्षण शिबिरो और ध्यानयोग शिबिरो जैसे अभियान चलाये। इसके अलावा धर्म प्रचारार्थे साहित्य का प्रचार करके अनेक "श्रीमद् भगवद् दशावतार" ज्ञानयज्ञ से जन जागृतिका कार्य किया था।

सारसापुरी कैवल ज्ञानपीठमें प.पू. करुणासागर महाराज की द्विशताब्दी महोत्सव प्रसंग पर संतो की उपस्थिति में आचार्यश्री अविचलदासजी महाराज तथा प्रभावशाली संत आचार्यश्री धर्मेन्द्रजी महाराजने हमारे आचार्यश्री करशनदासजी महाराज को शाल अर्पित करके सन्मानित किया और पीराणा संस्था को "प्रेरणापीठ धाम" का बिरुद दिया।

"शुभकामना" पारितोषिक

अखिल भारतीय संत समिति के साथ मिलकर सत्पंथ प्रेरणापीठमें दिनांक ५-६-७ मार्च १९९४ के दिनों में अखिल भारतीय संत समिति का दशवाँ महाअधिवेशन किया गया। जिसमें भारतीय संत समिति के भीष्म पितामह समान प. पू. विरकत शिरोमणी परमहंस वामदेवजी महाराजश्री, जगद्गुरु शंकराचार्यो, जगद्गुरुश्रीओ, महामंडलेश्वरश्रीओ, आचार्यश्रीओ, महंतो एवम् साधु संतो की उपस्थिति में "शुभकामना" पारितोषिक मिला था। इस अवसर पर सत्पंथी अनुयायीओने प. पू. आचार्यश्री करशनदासजी महाराजका "रजततुला" करके बहुमान किया था।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n23/mode/1up

realpatidar.com

इस अवसर पर प. पू. विरकत शिरोमणी परमहंस वामदेवजी महाराजकी प्रेरणा और आशीर्वादसे प. पू. आचार्यश्री करसनदास महाराजने पूर्ण भारत भर में संस्कार, संस्कृति और व्यसनमुक्ति का अभियान चलाया था ।

"विरवर"

कच्छ जिल्ले के मानकुवा गाँव में बाल-बालिका सुसंस्कार शिक्षण शिबिर कार्यक्रम समय पर गांधीनगर जिल्ला के स्वामी नारायण गुरुकुल-झुंडाल के शास्त्री पुरुसोत्तमचरणदास स्वामीश्रीने प.पू.आचार्यश्री करशनदासजी महाराज को "विर वर" का पारितोषित दिया था ।

"राष्ट्रीय युगपुरुष"

अखिल भारतीय वैदिक धर्म संमेलन दिनाँक ३१ डीसेम्बर १९९५ के दिन महानगरी मुंबई घाटकोपर में था । जिसमें भारत भर में आये हुए जगद्‌गुरु शंकराचार्यश्रीओ, जगद्‌गुरुश्रीओ, महामंडलेश्वरो, आचार्यश्रीओ, महंतो एवम् हजारो साधु-संतो और लाखो मानव मेदनीकी उपस्थिति में प. पू. आचार्यश्री करशनदासजी महाराज को "राष्ट्रीय युग पुरुष" की उपादिसे सन्मानित किये गये थे ।

आंध्रप्रदेशके हैदराबाद में अलकबीर कतलखाने को बंध करवाने के लिए अखिल भारतीय संत समिति के साथ प. पू. आचार्यश्री करशनदासजी महाराज सत्याग्रह में जुडे गये थे ।

realpatidar.com

realpatidar.com

"राष्ट्रीय संत"

अखिल भारतीय संत समिति का तेरहवाँ महाअधिवेशन नखत्राणा जिला कच्छ में दिनांक ३-४-५ में १९९७ के शुभ दिनों में मिला था। इस समय प. पू. आचार्य श्री करशनदासजी महाराज को गादीपति के रूप में दस साल पूर्ण हुए थे । इस संमेलनमें जगद्गुरु शंकराचार्यश्रीओ, जगद्गुरुश्रीओ, महामंडलेश्वरो, मंडलेश्वरो, आचार्यो, महंतो एवम् हजारो साधु-संतो की उपस्थिति में प. पू. जगद्गुरुश्री शंकराचार्य स्वामी श्री दिव्यानंदतीर्थजी महाराज-भानुपुरा पीठाधीश्वर के वरद् करकमलोंसे आचार्य श्री करशनदासजी महाराज को "राष्ट्रीय संत" की उपाधिसे सन्मानित किये थे ।

"अभिनंदन प्रशस्ति पत्र"

उपरोक्त प्रसंग पर प्रखर कर्मकांडी शास्त्रोक्त विद्वानश्री के. का. शास्त्रीजीकी ओर से "अभिनंदन प्रशस्ति पत्र" ब्रह्म समाज के प्रमुखश्री डाह्याभाई शास्त्रीजी के करकमलोसे दिया गया ।

अखिल भारतीय संत समिति

"पश्चिमालय अध्यक्षश्री"

अखिल भारतीय संत समिति का अहलाबाद के अधिवेशन में प. पू. आचार्यश्री करशनदासजी महाराजको इसी रूप में नियुक्त किये गये थे ।

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n25/mode/1up

realpatidar.com

"देवर्षि ऐवोर्ड"

भारतीय संस्कृति संवर्धक समिति सांदिपनी निकेतन-पोरबंदर के द्वारा प. पू. विरवर आचार्यश्री करशनदासजी महाराज को १० वी अक्तुबर १९९७ के दिन चिंतक श्री रमेशभाई ओझा (पूज्य भाईश्री) एवम् स्वामी श्री सच्चिदानंदजी महाराज के वरद् करकमलो से "देवर्षि" की उपाधि दी गयी ।

दिनांक २७-२८-२९ नवम्बर १९९८ के दरमियान सुरत में अखिल भारतीय द्वितीय "वैदिक धर्म संमेलन" का आयोजन किया गया था । दिनाँक : ७-८-९ मार्च १९९८ के दिनो में साबरकांठा जिल्ला का खेडब्रह्मा तहसिलका, कलोल कंपा में अखिल भारतीय तृतीय "वैदिक धर्म संमेलन" का भव्य आयोजन किया था ।

उनके समय काल में शहरो तथा कई गाँवो में श्री निष्कलंकी नारायण भगवान के मंदिरो का जीर्णोद्धार किया गया एवम् शिखरबंधी मंदिर नव निर्मित किये गये । आदर्श समाज के निर्माण के लिए शिक्षण के साथ संस्कार की मुख्य जरुरत है । इस बात को ध्यान में लेकर प्रेरणापीठ पीराणा में जून १९९७ से श्री गुरुकुल विद्याविहार इंग्लीश मिडियम स्कूल और छात्रालय को विविध सुविधाओं के साथ नवनिर्माण किया था ।

"जगद्गुरु पद प्रतिष्ठा महोत्सव"

दिनांक २३-२४-२५ नवम्बर २००१ के दिन प्रेरणा-पीठ में "जगद्गुरु" पद प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था ।

realpatidar.com

realpatidar.com

जिसमें जगद्‌गुरु शंकराचार्यो, जगद्‌गुरुश्रीओ, महामंडलेश्वरो, आचार्यो, महंतो एवम् हजारो की संख्यामें साधु-संतो और लाखो जन समुदाय की उपस्थिति में हम सबके लाडले प. पू. विरवर, देवर्षि, राष्ट्रीय संत, युग पुरुष, आचार्य श्री करशनदासजी महाराज को प्रेरणापीठ ''पीठाधिश्वर सत्पंथाचार्य जगद्‌गुरुश्री'' की उपाधि दी गयी ।

सत्पंथ धर्म के क्रांतिकारी, वचनसिद्ध, महापुरुष, जगद्‌गुरुश्री करशनदासजी महाराज बीसमी सदी में रहकर इक्सवीं सदी का स्पष्ट चित्र हम सबके ह्रदयमें अंकित कर दिया था ।

ऐसे प. पू. जगद्‌गुरु श्री करशनदासजी महाराज संवत २०५८ के आसो सुद १३, शनिवार दिनांक १९-१०-२००२ की सुबह इस जगतमें से अपने नश्वर देहको त्याग कर ब्रह्मधाम प्रयाण कर गये ।

ऐसे चन्द्र समान निर्मल, सूर्य समान तेजस्वी, गांधीजी जेसे अहिंसक, सरदार पटेल जैसे लोह पुरुष, दया के करुणासागर दिव्य विभूति, ''जगद्‌गुरु'' पूज्य सत्पंथाचार्य श्री करशनदासजी महाराज युग युग अमर रहो ।

पावनकारी जगद्‌गुरुश्री के चरणो में नत मस्तक कोटि-कोटि वंदन हो ।

● ● ●

realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1076/page/n27/mode/1up

realpatidar.com

"अलख धणीनी आरती"

अलख धणीनी आरती ने, रूडा चम्मर ढलाय,
स्वामीजीने छत्तर ढलाय,
चंदनने केसरनां, स्वामीजीने छांटणां छंटाय,
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...
पहेला कर्तायुगमां, स्वामीजीना सोनाना छे पाट,
स्वामीजीना सोनाना छे घट
सोनाने सिंहासन बेठा, श्री नरसिंहजी भगवान...
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...
बीजा त्रेतायुगमां, स्वामीजीना रूपाना छे पाट,
स्वामीजीना रूपाना छे घट,
रूपाने सिंहासन बेठा, श्री रामचंद्र भगवान....
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...
त्रीजा द्वापरयुगमां, स्वामीजीना त्रांबाना छे पाट,
स्वामीजीना त्रांबाना छे घट,
त्रांबाने सिंहासन बेठा, श्री कृष्णजी भगवान...
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...
चोथा कलियुगमां, स्वामीजीना माटीना छे पाट,
स्वामीजीना माटीना छे घट,
माटीने सिंहासन बेसे, श्री निष्कलंकी भगवान...
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...
आरे आरती सद्‌गोर ब्रह्माजी ए गाई...
गोर ब्रह्माजीए गाई...
जांबु केरा द्वीपमां नकलंकी रूपे छुपाई...
जय जय नकलंकी, स्वामी नकलंकी...

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

प. पू. जगद्‌गुरु सत्पंथाचार्य

श्री नानकदासजी महाराज

राष्ट्रीय संरक्षकश्री :

अखिल भारतीय संत समिति

प्रेरणापीठ पीराणा

।। असतो मा सत् गमय ।।

realpatidar.com